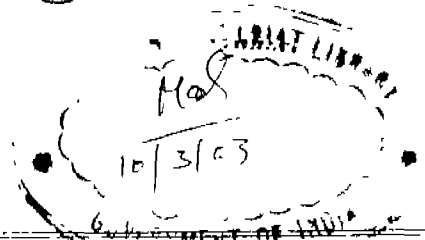




भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 148]
No. 148]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जून 14, 2002/ज्येष्ठ 24, 1924
NEW DELHI, FRIDAY, JUNE 14, 2002/JYAISTHA 24, 1924

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

पाटनरोधी तथा संबद्ध शुल्क महानिदेशालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 14 जून, 2002

प्रारंभिक जांच परिणाम/निष्कर्ष

विषय : भारत में इंडोनेशिया तथा थाइलैंड मूल के अथवा वहां से निर्यातित सिट्रिक एसिड के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच।

सं 14/11/2002-डीजीएडी.— सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (1995 में यथासंशोधित) तथा उसकी सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 को ध्यान में रखते हुए,

क. प्रक्रिया

2. जांच के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई हैं-

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसमें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को उपरोक्त नियमावली के अधीन मै. सितुर्जिया बायोकेमिस्ट्रल लिमि. से घरेलू उद्योग की ओर से लिखित याचिका प्राप्त हुई है जिसमें इंडोनेशिया तथा थाइलैंड (जिन्हें इसमें इसके पश्चात संबद्ध देश कहा गया है) मूल के अथवा वहां से निर्यातित सिट्रिक एसिड (जिसे इसमें इसके पश्चात संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है।

- (ii) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार जांच शुरू करने से पहले याचिकाकर्ता से पाटन आवेदन प्राप्त करने के बारे में भारत में स्थित संबद्ध देशों के दूतावास/उच्चायोग को सूचना दी;
- (iii) प्राधिकारी ने सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के अध्याय 29 के तहत सीमा शुल्क उप-शीर्ष सं. 2918.14 के अंतर्गत संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सिट्रिक एसिड के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच आरंभ करते हुए तारीख 16 अप्रैल, 2002 को भारत के राजपत्र, असाधारण में एक सार्वजनिक सूचना प्रकाशित की ।
- (iv) प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, उपयोगकर्ताओं, उद्योग परिसरों तथा परिवारियों को उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति भेजी और उन्हें अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया ।
- (v) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम 6 के उप-नियम(3) के अनुसार सभी ज्ञात निर्यातकों तथा भारत में स्थित संबद्ध देशों के दूतावास/उच्चायोग को याचिका की एक प्रति भेजी ।
- (vi) प्राधिकारी ने संबद्ध सूचना प्राप्त करने के लिए संबद्ध देशों के निम्नलिखित निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी ।
- मै. पीटी बुडी एसिड जया टी बी के, इंडोनेशिया
 - मै. थाई सिट्रिक एसिड क.लि., थाइलैंड
 - मै. एशिया सिट्रिक क. लि. थाइलैंड
 - मै. सिट्रिक एसिड इंडोनेशिया लि., थाइलैंड
- (vii) जांच आरंभ करने के संबंध में नई दिल्ली में स्थित संबद्ध देशों के दूतावास/उच्चायोग को भी सूचित किया गया था तथा उनसे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकर्ताओं को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का जवाब देने के लिए सलाह देने का अनुरोध किया गया ।
- (viii) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात उपयोगकर्ताओं/आयातकों को एक प्रश्नावली भेजी गई थी

1. मै. अमिजल केमिकल्स, मुंबई
2. मै. जेन प्रोसेस फूड्स लि., जलगांव
3. मै. पोसी फार्माकेम प्रा.लि., अहमदाबाद
4. मै. सी जे शाह एवं क० मुंबई
5. मै. सिपला लि., पुणे
6. मै. जेन प्रोसेस फूड्स लि., जलगांव
7. मै. सुनिल केमिकल्स, विराट् जिला थाने
8. मै. क्लेरिएन्ट (इंडिया) लि. थाने
9. मै. पार्ले इंटरनेशनल लि. मुंबई

- (ix) प्राधिकारी ने उसके द्वारा रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंश उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पार्टियों द्वारा देखने के लिए खुला रखा ।
- (x) ***** यह चिन्हन इस अधिसूचना में याचिकाकर्ता द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई सूचना तथा नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उसे ऐसा माने जाने का द्योतक है ।
- (xi) जांच 1 अप्रैल, 2001 से 31 दिसम्बर 2001 तक की अवधि के लिए की गई ।
- (xii) क्षति के बारे में याचिकाकर्ता से अतिरिक्त सूचना मांगी गई थी जो उन्होंने दे दी थी ।
- (xiii) प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जांच की ।
- (xiv) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत की गयी सूचना के आधार पर सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर संबद्ध वस्तु की ईष्टत~~त~~ उत्पादन लागत तथा भारत में इसकी निर्माण एवं बिक्री लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का भी विश्लेषण किया गया ताकि यह सुनिश्चित हो जाए कि पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क लगाना घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- (xv) जांच शुरुआत संबंधी सूचना की प्रतियां व्यापक परिचालन के लिए फिक्की, सी आई आई, एसोचैम इत्यादि को भी भेजी गई ।

ख. याचिकाकर्ता के :-

3. याचिकाकर्ता के निम्नलिखित प्रमुख बातें कही:-

- (i) व लोग भारत में संबद्ध वस्तु के दो उत्पादक हैं जिनमें मै. भारत स्टार्च इंडस्ट्रीज लि. का संयंत्र वर्ष 1999-2000 में बंद पड़ा था तथा उन्होंने 2000-01 में मात्र दिसम्बर, 2001 के तीसरे सप्ताह में सिट्रिक एसिड संयंत्र पुनः चालू किया। तथापि मै. सितुर्जिया बायो केमिकल्स लि. का पाटन रोधी नियमों में यथा परिभाषित घरेलू उद्योग द्वारा किए गए उत्पाद में 25 प्रतिशत से अधिक हिस्सा बनता है। इसलिए उनके पास घरेलू उद्योग की ओर से आवेदन करने का आधार है। इसके अलावा याचिकाकर्ता संबद्ध वस्तु के किसी आयातक/निर्यातक से संबंधित नहीं है।
- (ii) भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित सिट्रिक एसिड तथा संबद्ध देशों द्वारा निर्यातित सिट्रिक एसिड में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, उत्पाद विशिष्टताओं, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण के रूप में तुलनीय हैं। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ताओं द्वारा इन दोनों का उपयोग एक-दूसरे के स्थान पर किया जा रहा है। पाटनरोधी नियमों के अनुसार याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों द्वारा आयातित संबद्ध वस्तु का समान वस्तु माना जाना चाहिए।
- (iii) घरेलू उद्योग द्वारा दायर इस याचिका को निर्यातकों द्वारा किए जा रहे अविवेकपूर्ण पाटन के कारण घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति के मद्देनजर देखा जाना चाहिए। घरेलू उद्योग के निष्पादन को भी संबद्ध देशों के निर्यातकों द्वारा किए गए गंभीर पाटन के मद्देनजर देखा जाना चाहिए।
- (iv) यह स्पष्ट है कि संबद्ध देशों में प्रत्येक देश से हुए आयातों की मात्रा निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है। आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना उचित है क्योंकि संबद्ध देशों की निर्यात कीमतें भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित कीमतों से सीधे प्रतिस्पर्धी हैं। इसलिए प्राधिकारी से यह निवेदन है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से हुई क्षति का संचयी रूप से आकलन करें।
- (v) घरेलू उद्योग को आयातों के कारण वास्तविक क्षति हो रही है। घरेलू उद्योग द्वारा पिछले कई वर्षों से उत्पादन किया जा रहा है। घरेलू उद्योग द्वारा अपनायी गयी प्रौद्योगिकी अन्य उत्पादकों द्वारा अपनायी गयी प्रौद्योगिकी से तुलनीय है। यह निवेदन है कि भारत में बाजार की वर्तमान दशा का एकमात्र कारण इन देशों के निर्यातकों द्वारा कीमतों में कमी करना है।

ग. निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

4. मै. पी टी बुडी एसिड जया, इंडोनेशिया ने निर्धारित निर्यातक प्रश्नावली के प्रारूप में जांच आरंभ अधिसूचना के प्रत्युत्तर में सूचना प्रस्तुत की है। तथापि, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में अथवा जांच के अन्य पहलुओं के संबंध कोई तर्क नहीं दिया गया है। मै. एशिया सिट्रिक्स कं. लि. थाइलैंड, मै. थाई सिट्रिक एसिड कं. लि. तथा मै. सिट्रिक एसिड इंडस्ट्री कं. लि. थाइलैंड ने बतलाया है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यात नहीं किया है। किसी भी निर्यातक ने निर्धारित प्रश्नावली के प्रारूप में सूचना नहीं दिया है।

घ. प्राधिकारी द्वारा जांच तथा जांच परिणाम

5. इन जांच परिणामों पर पहुंचते समय आयातकों, निर्यातकों उपयोगकर्ताओं, घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा किए गए निवेदनों की जांच की गयी है और इसके बाद जहां कहीं उचित लगा, इन पर चर्चा की गयी है।
6. नए निर्यातकों अथवा जो निर्यातक कीमत संबंधी वचनपत्र देने के इच्छुक हैं, उनके मामलों पर प्राधिकारी द्वारा उपरोक्त नियमों के अनुसार उनके निवेदन पर विचार किया जाएगा।

(ड.) विचाराधीन उत्पाद

7. वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद सिट्रिक एसिड है जो सिट्रिक एसिड मोनोहाइड्रेट के नाम से भी जाना जाता है। सिट्रिक एसिड एक प्राथमिक रसायन है जो सामान्यतया सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के सीमाशुल्क उपशीर्ष 2918.14 के अन्तर्गत वर्गीकृत है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और यह वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है। सिट्रिक एसिड का खाद्य सुरक्षा, मृदु पेय, कन्फैक्शनरी, भेषज, वस्त्र रंगाई, छपाई उद्योग और ब्वाइलर सफाई आदि जैसे अन्य औद्योगिक अनुप्रयोगों में उपयोग किया जाता है।

घ. समान वस्तु

8. पाटनरोधी नियमों के नियम 2(घ) में दिया गया है कि 'समान वस्तु' का अर्थ है, एक ऐसी वस्तु जो जांच के अधीन उत्पाद से हर तरह से मिलती जुलती हो या उसके समान हो और ऐसी वस्तु के अभाव में ऐसी अन्य वस्तु, जिसके गुण जांच के अधीन वस्तु के गुणों से बिल्कुल मिलते जुलते हों। प्राधिकारी का मानना है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित तथा सम्बद्ध देशों से आयातित सिट्रिक एसिड का उपयोग एक दूसरे के स्थान पर हो सकता है। अतः यह दोनों वाणिज्यिक और तकनीकी दोनों रूप से प्रतिस्थापनीय है अतः नियमों के अर्थ के भीतर ये समान वस्तु हैं।

(छ) घरेलू उद्योग

9. मै0 सितुरगिया बायोकैमिकल्स लि0, ने याचिका दायर की है। उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार मै0 सितुरगिया बायोकैमिकल्स लि0, पाटनरोधी नियमों के नियम-5 के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर करने की स्थिति में है। जांच की अवधि के दौरान याचिकाकर्ता भारत में संबद्ध वस्तु का 25% से भी अधिक का घरेलू उत्पादन करता है। तदनुसार घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करने का मानदण्ड पूरा करता है।

ज. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमतें तथा पाटन मार्जिन

10. धारा 9क(1) के अन्तर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:

- (i) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो, या
- (ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की समुचित तुलना नहीं हो सकती हो, तो सामान्य मूल्य या तो:-

(क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किये जाने पर समान वस्तु का उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत जिसमें प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि की गई हो;

11. प्राधिकारी ने धारा क(1)ग के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजन के लिए सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजीं। मै0 एशिया सिट्रिक्स कं0, थाइलैंड, मै0 थाइ सिट्रिक एसिड कम्पनी और मै0 सिट्रिक एसिड इंडस्ट्री कं0 लि0, थाइलैंड ने बताया है कि उन्हें उपरोक्त नियम 6(8) के अनुसार थाइलैंड से निर्यातकों के मामले में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना पर भरोसा नहीं है।

मै0 पीटी बुडी एसिड जया टीबीके, इंडोनेशिया ने निर्धारित प्रश्नावली में जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर दायर किया है। तथापि, दिए गए उत्तर में कई ख़ासियां हैं जो निम्नानुसार हैं:

(क) कम्पनी ने परिशिष्ट 5 और 6 में घरेलू बिक्रियों के लिए बिक्री कीमत ढांचा दिया है। परिशिष्ट 5 में **** अमरीकी डालर के रूप में और **** अमरीकी डालर के रूप में परिशिष्ट 6 में कारखानाद्वारा स्तर पर कीमत दी हैं। इसमें बहुत भिन्नता दिखाई देती हैं और इसके लिए कोई उचित कारण नहीं दिए गए हैं।

(ख) निर्यातक द्वारा विनिर्मित उत्पादों के यथा अपेक्षित पूरे ब्यौरे परिशिष्ट 7 में नहीं दिए गए हैं।

(ग) कम्पनी ने भारत को निर्यात की कारखाना लागत और लाभ, घरेलू बिक्रियां और भारत से इतर देशों को निर्यात के यथा अपेक्षित पूर्ण ब्यौरे क्रमशः परिशिष्ट 8, 9 और 10 में नहीं दिए हैं। कच्ची सामग्री, मात्रा, दर और कुल लागत नहीं दी है। मात्रा, दर, कुल लागत के साथ उपयोगिता के लागतवार संघटक भी नहीं दिए गए हैं। अन्य संघटकों अर्थात् प्रत्यक्ष मजदूर, विनिर्माता ऊपरी खर्च, ह्रास, वित्तीय ब्याज लागतें, पैकिंग लागत और बिक्री तथा सामान्य खर्चों के बारे में कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है।

(घ) कम्पनी ने नियमों के अनुसार अपेक्षित प्रश्नावली के उत्तर में प्रस्तुत गोपनीय सूचना के अगोपनीय अंश प्रस्तुत नहीं किए हैं।

(ङ) कम्पनी ने कुल लाभ, बिक्रियों के ब्यौरे तथा प्रशासनिक और अन्य लागत तथा निवल लाभ के निर्धारण को दर्शाने वाला वर्तमान वर्ष और पिछले दो वित्तीय वर्षों के लिए लाभ और हानि खाता और तुलनपत्र की प्रतियां उपलब्ध नहीं कराई है।

(च) घरेलू बिक्रियों के लिए महीने के अन्त में पूरे महीने के लिए परिशिष्ट-1 में समग्र बीजक बढ़ाया हुआ प्रतीत होता है। दूर से की गई बिक्रियों और व्यापार के सामान्य सिद्धांत का निर्धारण करने के लिए इस मामले को स्पष्ट करने की जरूरत है। प्रश्नावली के अनुसार सभी घरेलू बिक्रियों के लिए पण्यवार ब्यौरे दिए जाने अपेक्षित हैं।

इंडोनेशिया से निर्यातकों द्वारा दायर अपर्याप्त उत्तर को देखते हुए प्राधिकारी निर्यातकों द्वारा दी गई सूचना को नहीं मानते हैं और प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर विश्वास करते हैं। तथापि, निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना की कमियों को दूर करने के पश्चात और प्रश्नावली के अनुसार प्रस्तुत अपेक्षित पूर्ण सूचना को हिसाब में लिया जाएगा।

12. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम तथा पाटनरोधी नियमों में यथाविहित सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन के निर्धारण को शासित करने वाले सिद्धांतों की व्याख्या उक्त नियमों के अनुबंध-1 में दी गई है। जांच शुरूआत के समय जैसाकि याचिकाकर्ताओं द्वारा बताया गया था सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर प्रत्येक देश के लिए अलग-अलग किया गया है। निर्यात कीमतों के बारे में भी प्राधिकारी ने डीजीसीआई एंड एस, कोलकाता द्वारा दी गई सूचना के आधार पर निर्यात कीमतों को स्वीकार किया। निवल निर्यात कीमत पर पहुंचने के लिए समुद्री भाड़ा, बीमा, अंतर्राज्यीय भाड़ा, पत्तन प्रभार और निर्यात बिक्रियों पर कमीशन के कारण समायोजनों के लिए घरेलू उद्योग द्वारा दी गई सूचना का उपयोग प्रत्येक देश के लिए अलग-अलग किया गया है। प्रारंभिक निष्कर्षों के प्रयोजन के लिए पाटन मार्जिन निम्नानुसार निकलता है:-

देश/क्षेत्र	निर्यातक/विनिर्माता	पाटन मार्जिन (%)
इंडोनेशिया	सभी निर्यातक	70.95
थाइलैंड	सभी निर्यातक	55.08

झ. क्षति

13. उपरोक्त नियम 11, अनुबंध-11 के तहत क्षति के बारे में जब किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है तो इस प्रकार के निष्कर्ष में ".....पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनके प्रभाव तथा इस प्रकार की वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे

आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि पाटित आयातों के कारण भारत में समान वस्तुओं की कीमत की तुलना में कीमत में कोई उल्लेखनीय गिरावट आई है अथवा नहीं अथवा क्या इस प्रकार के आयातों से कीमतों में अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक गिरावट आई है, अथवा कीमत वृद्धि में अन्यथा रूकावट आई है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती।

14. भारत में घरेलू उद्योग पर पड़े प्रभाव की जांच में उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संकेतकों जैसे उत्पादन, बिक्री, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा तथा मार्जिन आदि पर नियमों के अनुबंध-II (iv) के अनुसार विचार किया गया है।

ट. क्षति का संचयी मूल्यांकन

15. उपर्युक्त नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध-II (III) में यह भी व्यवस्था है कि जिस मामले में किसी उत्पाद का आयात एक से अधिक देशों से हुआ हो और उनकी एक साथ पाटनरोधी जांच हो रही है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातकों के प्रभाव का संचयी रूप से मूल्यांकन केवल तब करेगा जब वह यह निर्धारित करता है कि प्रत्येक देश से किए गए आयातों के बारे में तय किया गया पाटन मार्जिन निर्यात मूल्य के रूप में दिए गए 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से किए गए आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों का 3% है अथवा जहां प्रत्येक देश का निर्यात 3% से कम है वहां संचयी रूप से आयात समान वस्तु के आयातों का 7% से अधिक बनता है और आयातित वस्तु और समान वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए आयातों के प्रभावों का संचयी रूप से मूल्यांकन करना उचित है।

16. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन मार्जिन और संबद्ध देशों से किए गए आयातों की मात्रा उक्त निर्धारित सीमा से अधिक है। इंडोनेशिया और थाइलैंड से हुए आयातों के प्रभावों का संचयी

मूल्यांकन करना उचित है क्योंकि भारतीय बाजार की निर्यात कीमतों की प्रतिस्पर्धा सीधे घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत कीमतों से हो रही थी जो घरेलू उत्पादकों का स्थान ले रहे थे ।

क्षति का मूल्यांकन

17. उपरोक्त के अनुसार घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले आर्थिक संकेतक जैसे उत्पादन क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा आदि की जांच की गई है जो निम्नानुसार है:-

(क) संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि:- संबद्ध देशों से आयात कुल आयातों की तुलना में वर्ष 2000-2001 में 27.78% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान बढ़कर 75.28% हो गए। इसके अलावा देश में कुल मांग की तुलना में संबद्ध देशों से आयात वर्ष 2000-2001 में भी 12.87% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 41.84% हो गए, जैसे कि नीचे सारिणी में दिया गया है ।

वर्ष	आयात(मी0टन)	कुल मांग	% हिस्सा
1999-2000	4.86 %	100.00	4.86
2000-2001	12.87 %	97.18 %	12.87 %
अप्रैल-दिसम्बर, 2001	41.84 %	76.91	41.84 %
वार्षिक	41.84 %	102.54 %	41.84 %

(सूचीबद्ध)

ख. भारतीय उत्पादकों द्वारा रखे गए बाजार हिस्से में गिरावट

निम्नलिखित सारिणी से यह प्रदर्शित होता है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वर्ष 2000-2001 में 53.67% से घटकर जांच अवधि में 44.42% तक गिरावट आई है, जबकि कुल मांग में ऊर्ध्वगामी रुख प्रदर्शित हो रहा है ।

वर्ष	घरेलू बिक्री	कुल मांग	% हिस्सा
1999-2000	100.00	100	49.82%
2000-2001	104.68	97	12.87%
अप्रैल-दिसम्बर, 2001	68.57	77	41.84%
वार्षिक	91.42	103	41.84%

(सूचीबद्ध)

उपरोक्त से यह देखा जाता है कि संबद्ध देशों से आयात, देश में कुल मांग की तुलना में बढ़ा है।

(ग) उत्पादन/उत्पादकता

घरेलू उद्योग के उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में जांच अवधि के दौरान पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष की तुलना में 4% तक की गिरावट आई है।

वर्ष	क्षमता (मी.टन)	उत्पादन	क्षमता उपयोग(%)
1999-2000	100	100.00	97.79%
2000-2001	100	100.82	98.59%
अप्रैल-दिसम्बर, 2001	75	72.55	94.60%
वार्षिक	100	96.73	94.59%

(सूचीबद्ध)

(घ) याचिकाकर्ता कंपनी की बिक्री कीमत

जांच अवधि में गत वर्ष की तुलना में बिक्री कीमत में भी गिरावट आई है।

वर्ष	क्षमता (मी.टन)	उत्पादन	क्षमता उपयोग(%)
1999-2000	100.00	100.00	100.00
2000-2001	104.68	105.73	101.00
अप्रैल-दिसम्बर, 2001	68.57	68.68	100.17
वार्षिक	91.42	96.82	100.17

(सूचीबद्ध)

ड.) लाभप्रदता

घरेलू उद्योगों की जांच से यह इंगित होता है कि घरेलू उद्योग को प्रति इकाई बिक्री में हुए सीधे घाटे के रूप में गंभीर क्षति हुई है। बिक्री कीमत और जांच अवधि के दौरान प्रति इकाई उत्पादन लागत की तुलना प्रति इकाई घाटे में हुई वृद्धि को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि केवल कीमत ही एक ऐसा कारक है जिसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का एक कारण समझा जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप हानियां हुई हैं।

च.) कीमत कटौती

यह पाया गया है कि संबद्ध देशों के पाटन से संबद्ध वस्तु के लिए घरेलू उद्योग द्वारा निवल बिक्री प्राप्ति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा था। इसके बाजार हिस्से को रोकने के लिए याचिकाकर्ता को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की कम कीमत और इसके पाटित आयातों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी थी। पाटित आयातों का पहुंच मूल्य यह भी इंगित करता है कि कीमतों में कटौती हुई है।

छ.) कम कीमत पर बिक्री

प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के इस दावे की भी जांच की है कि घरेलू उद्योग को प्रत्यक्ष हानियां हो रही हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति का मूल्यांकन करने में कम कीमत पर बिक्री एक महत्वपूर्ण संकेतक है। प्राधिकारी ने एक उचित बिक्री कीमत का निर्धारण किया है और इसकी तुलना पहुंच मूल्य के साथ की है ताकि कम कीमत पर बिक्री करने की सीमा तक पहुंचा जा सके।

ज.) निवेश पर प्राप्ति और पूंजी जुटाने की क्षमता

जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए निवेश पर प्राप्ति की दर घरेलू उद्योग के लिए नकारात्मक रही है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग नई पूंजी जुटाने या इस उत्पाद में नए निवेश की योजना बनाने में सक्षम नहीं रहा है।

झ.) रोजगार

जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर में कोई महत्वपूर्ण सुधार नहीं हुआ है।

क्षति का निर्धारण

18. साक्ष्य की जांच करने पर यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन और घरेलू बिक्रियों में मामूली कमी हुई है। याचिकाकर्ता कंपनी को संबद्ध देशों से कम कीमतों और पाटित आयातों के कारण हानि हुई है। प्राधिकारी के पास उपलब्ध साक्ष्य के अनुसार क्षति का पता लगाने का अति महत्वपूर्ण मानदण्ड कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री करना है। प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर यह पता लगाया गया है कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है और जांच अवधि के दौरान इसे आगे और क्षति होने का खतरा है।

कारणात्मक संबंध

19. यह निर्धारण करने के लिए कि क्या घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई थी, प्राधिकारी ने निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में लिया है:-

(क) प्राधिकारी पाते हैं कि संबद्ध वस्तु का एक ही बाजार है जहां पाटित आयातों की तुलना घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु से प्रत्यक्ष रूप से होती है। मांग में कमी आना घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है। आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तु समान वस्तुएं हैं और इनका उपयोग/अंतिम उपयोग एक समान है। इस प्रकार, कीमत एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है जिसमें वस्तु की खरीद का यह निर्धारण होता है कि वस्तु की खरीद आयातित स्रोतों से हुई है या घरेलू स्रोतों से।

(ख) संबद्ध देशों से हुए आयातों से भारतीय बाजार में एक ऐसी सीमा तक उत्पाद की कीमतों में ह्रास हुआ है जहां घरेलू उद्योग को अपनी पूरी उत्पादन लागत को वसूलने और भारत में संबद्ध वस्तु की बिक्री से उचित लाभ अर्जित करने से रोका गया था।

(ग) पाटित कीमतों पर संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को पर्याप्त हानियां हुई हैं।

ज) भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे:-

20. पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे घरेलू उद्योग को नुकसान हो रहा है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की पुनः बहाली करना है जो कि देश के सामान्य हित में है।

21. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तु के इस्तेमाल से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं, और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धा पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा पाटनरोधी उपायों से कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों द्वारा प्राप्त होने वाले अनुचित लाभों को पाटनरोधी उपायों से रोका जा सकेगा, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और इससे संबद्ध वस्तुओं के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध हो सकेंगे। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों से संबद्ध देश से आयात किसी भी प्रकार प्रतिबंधित नहीं होंगे इसलिए उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

झ) निष्कर्ष

22. पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि

(क) इंडोनेशिया और थाइलैंड के मूल की या वहां से निर्यातित सिट्रिक एसिड का भारत को सामान्य मूल्य से कम कीमत पर निर्यात किया गया है जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ;

(ख) इंडोनेशिया और थाइलैंड से संबद्ध वस्तु के आयातों से भारतीय उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

(ग) इंडोनेशिया और थाइलैंड से पाटित आयातों द्वारा संचयी रूप से क्षति हुई है।

23. यह आवश्यक समझा गया है कि अंतिम रूप से निर्धारण होने तक इंडोनेशिया और थाइलैंड के मूल की या वहां से निर्यातित सिट्रिक एसिड के सभी आयातों पर अनंतिम रूप से पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए।

24. यह विचार किया गया था कि क्या पाटन मार्जिन से कम शुल्क क्षति को समाप्त करने हेतु पर्याप्त होगा। इस प्रयोजनार्थ आयातों की पहुंच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित याचिकाकर्ता की

क्षति रहित कीमत के साथ की गई थी । जहां कहीं अंतर पाटन मार्जिन से कम था वहां पाटन मार्जिन से कम एक शुल्क की सिफारिश की गई है ।

25. तदनुसार, यह प्रस्ताव किया गया है कि अंतिम निर्धारण होने तक इंडोनेशिया और थाइलैंड के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सिट्रिक एसिड पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से नीचे कॉलम में यथा-उल्लिखित अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए ।

क्र.सं०	निर्यातक/उत्पादक	सिफारिश किए गए पाटनरोधी शुल्क की राशि (अमरीकी डालर/एम टी)
1	2	3
इंडोनेशिया	सभी निर्यातक	५५६.६७
थाइलैंड	सभी निर्यातक	३७५.३६

26. इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के अधीन सीमा शुल्क विभाग द्वारा यथा निर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क अधिनियम 1975 की धारा 3,3क,8ख, 9 और 9क के तहत लगाए गए अतिरिक्त सीमा शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के सीमा शुल्क शामिल होंगे ।

ढ. आगे की प्रक्रिया

27. प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया जाएगा:-

(क) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों से इन जांच परिणामों के बारे में टिप्पणियां आमंत्रित करेंगे और उन पर अंतिम परिणामों में विचार किया जाएगा;

(ख) प्राधिकारी द्वारा संबंधित समझे जाने वाले निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ता तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों को अलग से लिखा जा रहा है जो प्रारंभिक जांच परिणामों की तारीख से 40 दिनों के अंदर अपने

विचारों से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन जांच परिणामों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है।

(ग) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों को मौखिक अनुरोध करने का अवसर प्रदान करेंगे, जिसे बाद में लिखित में देना होगा।

(घ) प्राधिकारी आवश्यक समझी गई सीमा तक आगे सत्यापन करेंगे।

(ङ.) अंतिम जांच परिणामों की घोषणा करने से पहले प्राधिकारी आवश्यक तथ्यों को प्रकट करेंगे।

एल. बी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

DIRECTORATE GENERAL OF ANTI DUMPING AND ALLIED DUTIES

NOTIFICATION

New Delhi, the 14th June, 2002

PRELIMINARY FINDINGS

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Citric Acid into India originating in or exported from Indonesia and Thailand.

No. 14/11/2002-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

A. PROCEDURE

2. The procedure described below has been followed:-

- i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s Citurgia Biochemicals Ltd., on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Citric Acid (hereinafter referred to as subject good) originating in and exported from Indonesia and Thailand (hereinafter referred to as subject countries);
- ii) The Authority notified the Embassy/High Commission of the subject countries in India about the receipt of dumping application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 *supra*;

- iii) The Authority issued a Public Notice dated 16th April, 2002, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping proceedings concerning imports of Citric Acid originating in or exported from the subject countries falling under Customs Sub-heading 2918.14 under Chapter 29 of the Customs Tariff Act, 1975.
- iv) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers, users, industry associations and to the complainants and gave them an opportunity to make their views known in writing.
- v) According to sub-rule (3) of Rule 6 *supra*, the Authority provided a copy of the petition to all the known exporters and Embassy/High Commission of subject countries in India.
- vi) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following exporters from the subject countries:
 - ❖ M/s Pt Budi Acid Jaya Tbk, Indonesia
 - ❖ M/s Thai Citric ACid Co.Ltd., Thailand
 - ❖ M/s Asia Citrix Co. Ltd., Thailand
 - ❖ M/s Citric Acid Industry Ltd., Thailand
- vii) The Embassy/High Commission of subject countries in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and were requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time;
- viii) The questionnaire was sent to the following known users/importers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4):
 - 1. M/s Amijal Chemicals, Mumbai
 - 2. M/s Jain Process Foods Ltd., Jalgaon

3. M/s Posy Pharmachem P. Ltd., Ahmedabad
 4. M/s C.J. Shah & Co., Mumbai
 5. M/s Cipla Ltd., Pune
 6. M/s Jain Process Foods Ltd., Jalgaon
 7. M/s Sunil Chemicals, Virar, Distt. Thane
 8. M/s Clariant(India) Ltd., Thane.
 9. M/s Parle International Ltd., Mumbai
- x) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;
- x) ***** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- xi) The investigation covered the period from 1st April, 2001 to 31st December, 2001.
- xii) Additional details regarding injury were sought from the petitioner, which were also furnished.
- xiii) The Authority conducted on-the-spot verification of the domestic industry to the extent considered necessary.
- xiv) The cost of production of the domestic industry was also analysed to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles(GAAP) based on the information furnished by petitioner so as to ascertain if anti dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to domestic industry.
- xv) Copies of initiation notice was also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc., for wider circulation.

B. PETITIONER'S VIEWS

3. The petitioners have made the following major points in their submissions:

- i. They are two producers of the subject goods in India of which M/s Bharat Starch Industries Ltd., plant of which was lying closed in the years 1999-2000 and 2000-01 and recommissioned their Citric Acid Plant only in the third week of December, 2001. M/s Citurgia Biochemicals Ltd., account for more than 25% of the production by the domestic industry as defined in the Anti Dumping Rules. Therefore, they have the standing to file the application on behalf of the domestic industry. Further, the petitioners are not related to any importer/exporter of the subject product.
- ii. There is no known difference in Citric Acid produced by the Indian industry and that exported from subject countries. The subject goods produced by the Indian industry and imported from subject countries are comparable in terms of physical as well as chemical characteristics, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably. Subject goods produced by the petitioners and imported from subject countries should be treated as like article in accordance with the anti-dumping Rules.
- iii. The present petition filed by the domestic industry should be seen in the light of the severe injury suffered by the domestic industry due to indiscriminate dumping by the exporters. The performance of the domestic industry should also be seen in the light of severe dumping resorted by the exporters from the subject countries.

- iv. It is submitted that the quantum of imports from each subject country is more than the de-minimis level. Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the export prices from the subject countries directly compete with the prices offered by the domestic industry in the Indian market. The Authority is, therefore, requested to assess injury to the domestic industry cumulatively from the subject countries.
- v. Material injury is being caused to domestic industry from imports. The domestic industry is producing for the past many years. The technology adopted by the domestic industry is comparable to the technology adopted by other players. It is submitted that the export at dumped prices by the exporters from subject countries is the sole reason for the present state of market in India.

C. VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES :

4. M/s P.T. Budi Acid Jaya, Indonesia has furnished information in response to the Initiation Notification in the format of the exporter questionnaire prescribed. However, no arguments have been given regarding injury and causal link or other aspects of investigation. M/s Asia Citrix Co., Ltd., Thailand, M/s Thai Citric Acid Co. Ltd., and M/s Citric Acid Industry Co. Ltd., Thailand, have stated that they have not exported to India during the period of investigation. None of the importers has given information in the format of the prescribed questionnaire.

D. EXAMINATION AND FINDINGS BY AUTHORITY

5. The submission made by the importers, exporters, users, domestic industry and other interested parties have been examined and considered while arriving at these findings and wherever appropriate have been dealt hereinafter.

6. The cases of new exporters or those stated to be willing to give price undertaking shall be considered, on request, by the Authority in accordance with the Rules supra.

E. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

7. The product under consideration in the present petition is "Citric Acid" also known as Citric Acid Monohydrate. Citric Acid is a basic chemical normally classified under Customs sub-headings 2918.14 of the Custom Tariff Act. The Custom classification is indicative only and not binding on the scope of investigation. Citric Acid is used as preservative in food, soft drinks, confectionery, drugs, in textile dyeing and printing industry and has other industrial uses like in boiler cleaning etc..

F. LIKE ARTICLE

8. Rule 2(d) of the Anti Dumping Rules specifies that "Like Articles" means an Article which is identical or alike in all respects to the product under investigation or in the absence of such an Article, another article, having characteristics closely resembling those of the articles under examination. The Authority holds that Citric Acid being produced by the domestic industry and that being imported from the subject countries can be used interchangeably and thus the two are commercially and technically substitutable and therefore, are like articles within the meaning of the Rules.

G. DOMESTIC INDUSTRY

9. M/s Citurgia Biochemicals Ltd., have filed the petition. As per evidence available, M/s Citurgia Biochemicals Ltd., have the standing to file the petition on behalf of domestic industry as per Rule 5 of the Anti Dumping Rules. The petitioner accounts for more than 25% of the Domestic production during the Period of Investigation of the subject goods in India.

Accordingly, the Authority holds that the petitioner fulfils the requisite criteria to represent the domestic industry.

H. NORMAL VALUE, EXPORT PRICES & DUMPING MARGINS

10. Under Section 9A(1)© normal value in relation to an article means:

- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section(6); or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either –

- (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

- (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

11. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). M/s Asia Citrix Co., Ltd., Thailand, M/s Thai Citric Acid Co. Ltd., and M/s Citric Acid Industry Co. Ltd., Thailand, have stated that they have not exported to India during the period of investigation. Since none of the exporters from Thailand have furnished information to the Authority in the prescribed questionnaire, the Authority has

relied on the best information available in the case of exporters from Thailand as per Rule 6(8) *supra*.

M/s P.T. Budi Acid Jaya Tbk, Indonesia, have filed reply to the Initiation Notification in the prescribed questionnaire. However, there are number of deficiencies in the reply filed which are as follows:

- a) The company has given sales price structure for domestic sales in Appendix 5 and Appendix 6. Appendix 5 gives price at ex-factory level as US \$ **** and in Appendix 6 as US ****. This shows wide variation and no justification for the same has been given.
- b) The complete details of the products manufactured by the exporter, as required in Appendix 7, have not been furnished.
- c) The company has not furnished complete details of factory cost and profit of export to India, domestic sales and exports to countries other than India, as solicited in the Appendices 8, 9 & 10 respectively. The details of raw materials, quantity, rate and total cost has not been furnished. The element wise cost of utilities along with quantity, rate, total cost, has also not been furnished. No information regarding total cost of other elements, namely direct labour, manufacturer overheads, depreciation, financial & interest costs, packing costs & selling and general expenses, have been furnished.
- d) The company has not furnished the non confidential version of the confidential information submitted in reply to the questionnaire required as per Rules.
- e) The company has not provided copies of trading, profit & loss account and balance sheet for the current year and previous two financial years showing the determination of gross profit, details of selling and administration and other costs and net profit.
- f) In Appendix 1, for the domestic sales, one consolidated invoice seem to have been raised for the entire month at

the end of the month. There is need to clarify the matter in order to determine the sales being at arm's length and in the ordinary course of trade. As per the questionnaire, transaction-wise details are required to be given for all the domestic sales.

In view of the inadequate response filed by the exporter from Indonesia, the Authority has decided not take into account the information furnished by the exporter and has relied on the information provided by the domestic industry for the purpose of preliminary findings. However, the information furnished by the exporter shall be taken into account after the deficiencies are removed and full information required as per the questionnaire, is furnished.

12. The principles governing the determination of normal value, export price and the dumping margin as laid down in the Custom Tariff Act and the Anti Dumping Rules are elaborated in Annexure I to the Rules. As submitted by the petitioners at the time of initiation, the normal value has been determined on the basis of the constructed cost of production separately for each country. Also regarding the export prices, the Authority has adopted the export prices based on information provided by DGCI&S, Kolkata. For adjustments on account of Ocean freight, insurance, inland freight, port charges and commission on the exports sales, the information provided by the domestic industry has been used for arriving at net export price separately for each country. The dumping margins arrived at for the purpose of preliminary findings are as follows:

Country/Territory	Exporters/ Manufacturers	Dumping Margin(%)
Indonesia	All exporters	70.95
Thailand	All exporters	55.08

I. INJURY

13. Under Rule 11 supra, Annexure II, when a finding of injury is arrived at such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry "..... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles" In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

14. For the examination of the impact on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of industry as production, sales, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc., have been considered in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

J. CUMULATIVE ASSESSMENT OF INJURY

15. Annexure II (iii) under Rule 11 supra further provides that " in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti Dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual country is less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article and cumulative assessment of the

imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article”.

16. The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from subject countries are more than the limit prescribed above. Cumulative assessment of the effect of the imports from Indonesia and Thailand are appropriate since the export prices from these countries were directly competing with the prices offered by the Domestic Industry in the Indian market and displacing domestic producers here.

K. INJURY ASSESSMENT

17. All economic parameters affecting the Domestic Industry as indicated above such as production capacity utilisation, sales volume etc., have been examined as under :-

a. Increased imports from the Subject Countries

The imports from the subject countries in comparison to the total imports have increased from 27.78% in 2000-2001 to 75.28% during the period of investigation. Further, imports from the subject countries in comparison to the total demand in the country have also increased from 12.87% in 2000-2001 to 41.84% during the period of investigation, as given in the following table:

Year	Imports(MT)	Total Demand	% share
1999-2000	4.86%	100.00	4.86
2000-2001	12.87%	97.18%	12.87%
April-Dec, 2001	41.84%	76.91%	41.84%
Annualized	41.84%	102.54%	41.84%

(Indexed)

b. Decline in market share held by the Indian producers

The table below shows that the market share of domestic industry declined from 53.67% in 2000-2001 to 44.42% in the period of investigation, while the total demand is showing an upward trend.

Year	Domestic Sales	Total Demand	% share
1999-2000	100.00	100	49.82%
2000-2001	104.68	97	12.87%
April-Dec, 2001	68.57	77	41.84%
Annualized	91.42	103	41.84%

(Indexed)

It is seen from the above that the imports from the subject countries have gone up in relation the total demand in the country.

c. Output/Productivity

There has been a drop in the production as well as the capacity utilization of the domestic industry to the extent of about 4% in the period of investigation over the preceding financial year.

Year	Capacity(MT)	Production	Cap. Utilization(%)
1999-2000	100	100.00	97.79%
2000-2001	100	100.82	98.59%
April-Dec, 2001	75	72.55	94.60%
Annualized	100	96.73	94.59%

(Indexed)

d. Selling Price of Petitioner Company.

There has been a decline in the selling price also in the period of investigation over the last year.

Year	Sales Volume(MT)	Sales Value (Rs. lacs)	Unit Price (Rs./MT)
1999-2000	100.00	100.00	100.00
2000-2001	104.68	105.73	101.00
April-Dec, 2001	68.57	68.68	100.17
Annualized	91.42	96.82	100.17

(Indexed)

e. Profitability

An examination of the records of the domestic industry indicates that the domestic industry has suffered serious injury in the form of direct losses per unit of sale. A comparison of the selling price and the cost of production per unit during the period of investigation clearly shows an increase in the loss per

apparent that it is the price factor alone which can be considered to have led to injury to the domestic industry, resulting in losses.

f. Price Undercutting

It has been observed that dumping by the subject countries has had a significant impact on the net sales realization by the domestic industry for the subject goods. To hold on to its market share, the petitioner had to compete with low priced and dumped imports of subject goods from the subject countries. The landed values of the dumped imports also indicate that there is price under-cutting taking place.

g. Price Underselling

The Authority has also examined the claim of the domestic industry that the domestic industry is suffering on account of direct losses. The Authority notes that price underselling is an important indicator to make an assessment of injury. The Authority has worked out a fair selling price and compared the same to the landed value to arrive at the extent of price underselling.

h. Return on investment & Ability to raise capital

The rate of return on the investment during the period of investigation for the product under consideration has been negative for the domestic industry as a result of which the domestic industry has not been able to raise fresh capital or plan new investment in this product.

i. Employment

The employment levels of domestic industry have not undergone any significant change during the period of investigation.

Determination of Injury.

18. On examination of the evidence, it has been found that there is marginal decline in production and domestic sales of the domestic industry. The petitioner company is suffering losses on account of low priced and dumped imports from the

subject countries. The most significant parameter evidencing injury is the price undercutting and price underselling as per the evidence available with the Authority. On the basis of the evidence available before the Authority, it is determined that the domestic industry has suffered injury and is suffering further threat of injury during the period of investigation.

J. CAUSAL LINK

19. In determining whether material injury to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority took into account the following facts:-

- a. The Authority observes that there is a single market for the subject goods where dumped imports compete directly with the goods produced by the domestic industry. Decline in demand is not a factor causing injury to the domestic industry. The imported subject article and the domestically produced goods are like articles and are used for the same applications/end uses. Thus, pricing becomes the most important factor determining purchase of the article from either imported sources or domestic sources.
- b. The imports from subject countries suppressed the prices of the product in the Indian market to such an extent that the domestic industry was prevented from recovering its full cost of production and earn a reasonable profit from the sale of subject goods in India.
- c. Dumped imports of subject goods from subject countries at dumped prices has resulted in substantial losses to the domestic industry.

H. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES:

20. The purpose of anti dumping duties is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market which is in the general interest of the country.

21. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from Subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

I. CONCLUSIONS

22. It would be seen, after considering the foregoing, that:

- (a) Citric Acid originating in or exported from Indonesia and Thailand have been exported to India below Normal Value, resulting in dumping;
- (b) the Indian industry has suffered material injury from exports of subject goods from Indonesia and Thailand;
- (c) The injury has been caused cumulatively by the dumped imports from Indonesia and Thailand.

23. It is considered necessary to impose anti dumping duty, provisionally, pending final determination, on all imports of Citric Acid originating in or exported from Indonesia and Thailand pending final determination.

24. It was considered whether a duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove the injury. The average landed value of the imports, for the purpose, was compared with the non-injurious price for the petitioner company,

landed value of the imports, for the purpose, was compared with the non-injurious price for the petitioner company, determined for the period of investigations. Wherever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended.

25. Accordingly, it is proposed that provisional Anti Dumping Duty as indicated in column 3 below be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on Citric Acid originating in or exported from Indonesia and Thailand pending final determination.

Sl. No.	Exporters/ Producers	Amount of Anti Dumping Duty Recommended (US \$ per MT)
1	2	3
Indonesia	All exporters	456.67
Thailand	All exporters	374.36

26. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except Additional duty of Customs levied under section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

N. FURTHER PROCEDURE

27. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:

- a. The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;

- b. Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of preliminary findings. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of these findings;
- c. The Authority would provide opportunity to all the interested parties for making oral submissions which have to be rendered thereafter in writing;
- d. The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;
- e. The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

L V SAPTHARISHI, Designated Authority